भारत सरकार

जनजातीय कार्य मंत्रालय

लोकसभा

अतारांकित प्रश्न संख्या- 580

उत्तर देने की तारीख- 25/07/2024

विलुप्त होने के कगार पर जनजातीय भाषाएं

580. श्रीमती जोबा माझी:

क्या जनजातीय कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने झारखंड की आदिम जनजातियों, जिनकी जनसंख्या लगभग तीन लाख है, जो कुल जनजातीय जनसंख्या का लगभग चार प्रतिशत हैं, जिसमें अधिकांश बिरजिया, कोरवा, माल पहाड़िया, परहैया, सौरिया पहाड़िया, खड़िया जैसी आदिम जनजातियां हैं, द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं की लिपि को संरक्षित और विकसित करने के लिए कोई प्रस्ताव/नीति तैयार की है क्योंकि उनकी भाषाएं उनकी संस्कृतियों की पहचान हैं और वे विलुप्त होने के कगार पर हैं; और

(ख) यदि हां, तो इन भाषाओं के विलुप्त होने के कगार पर होने के क्या कारण हैं?

उत्तर

जनजातीय कार्य राज्यमंत्री

(श्री दुर्गादास उइके)

(क) और (ख): जनजातीय कार्य मंत्रालय ने जनजातीय भाषाओं के संरक्षण और अनुसूचित जनजाति के छात्रों के बीच सीखने की उपलब्धियों के स्तर को बढ़ाने के लिए द्विभाषी प्राइमरों के विकास हेतु केंद्र प्रायोजित योजना 'टीआरआई को सहायता' के तहत झारखंड राज्य सहित राज्य सरकारों/संघ राज्य क्षेत्रों के जनजातीय अनुसंधान संस्थानों को सहायता प्रदान करता है। राज्य/ संघ राज्य क्षेत्रों के टीआरआई प्राइमरों, शब्दकोषों को तैयार करके और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन के माध्यम से लुप्तप्राय जनजातीय भाषाओं का दस्तावेजीकरण और संरक्षण कर रहे हैं।.

शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार ने "भारत की लुप्तप्राय भाषाओं की सुरक्षा और संरक्षण के लिए योजना" (एसपीपीईएल) नामक योजना शुरू की है। इस योजना के तहत केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल), मैसूर लुप्तप्राय भाषाओं पर काम कर रहा है। पहले चरण में, उन भाषाओं पर काम करने के लिए 117 जनजातीय

भाषाओं की पहचान की गई है, जो मोटे तौर पर लगभग 10,000 से कम लोगों (वक्ताओं) द्वारा बोली जाती हैं।

इसके अलावा, "जनजातीय अनुसंधान, सूचना, शिक्षा, संचार और कार्यक्रम (टीआरआई-ईसीई)" योजना के "उत्कृष्टता केंद्र को समर्थन के लिए वित्तीय सहायता" घटक के तहत, जनजातीय भाषाओं के दस्तावेज़ीकरण सहित आऊटरीच अनुसंधान अध्ययन कार्यक्रम चलाने के लिए प्रतिष्ठित संस्थान को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इस संबंध में, मंत्रालय ने 2018-19 और 2019-20 के दौरान भाषा अनुसंधान और प्रकाशन केंद्र को परियोजनाओं को मंजूरी दी है, जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ संकटग्रस्त/मृतप्राय भाषाओं की पहचान और दस्तावेज़ीकरण की गतिविधि शामिल है। संगठन ने कोरकू, निहाली, कोलामी, वादी, हलपति, डुंगरा भीली, धावड़ी, धत्ती, थाली, नाहल और सेहेरिया भाषाओं का दस्तावेजीकरण किया है।

मंत्रालय ने एक डिजिटल दस्तावेज़ संग्रह (repository.tribal.gov.in) भी विकसित किया है, जहां टीआरआई ने अब सभी गतिविधियां, दस्तावेज़, अनुसंधान रिपोर्टो, प्रकाशनों को अपलोड करना शुरू कर दिया है, जो सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध है।

डॉ. रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण अनुसंधान संस्थान, झारखंड सरकार ने सूचित किया है कि उन्होंने झारखंड की आठ आदिम जनजातियों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं को संरक्षित और बढ़ावा देने के उद्देश्य से निम्नलिखित उपाय किए हैं:

क्र. सं.	**गतिविधि**	**लक्षित पीवीटीजी का नाम**	**विवरण**
1	**कार्यशाला**	असुर, बिरजिया, बिरहोर, सौरिया पहाड़िया, कोरवा, परहैया और सबर	असुर, बिरजिया, बिरहोर, सौरिया पहाड़िया, कोरवा, परहैया और सबर भाषाओं में व्याकरण, गद्य और पद्य पर पुस्तकें तैयार करने के लिए लेखन कार्यशालाएं।
2	**दस्तावेज़ीकरण**	बिरहोर, कोरवा, असुर और बिरजिया	बिरहोर, कोरवा, असुर और बिरजिया के त्यौहारों, नृत्य और गीतों का साहित्यिक अध्ययन, श्रृव्य-दृश्य दस्तावेजीकरण
3	**प्रकाशन**	असुर, बिरहोर, बिरजिया, कोरवा, सौरिया पहाड़िया	**1. Asur (असुरी)** **क) व्याकरण** **ख) गद्य-पद्य** **ग) प्रवेशिका (प्राइमर)** **घ) असुरी वार्तालाप निर्देशिका**

			2. Birhor (बिरहोर) **क) व्याकरण** **ख) गद्य-पद्य** **ग) बिरहोर वार्तालाप निर्देशिका** **3. Birjia (बिरजिया)** **क) व्याकरण** **ख) गद्य-पद्य** **4. Korwa (कोरवा)** **क) प्रवेशिका (प्राइमर)** **ख) वार्तालाप निर्देशिका** **5. Sauriya Pahariya (मालतो)** **क) व्याकरण** **ख) गद्य-पद्य** **ग) वार्तालाप निर्देशिका**
	वर्तमान वर्ष के लिए निम्नलिखित पाठों का विकास कार्य शुरू किया गया है तथा इसका कार्य प्रगति पर है.	माल पहाड़िया, परहैया, कोरवा और सबर	**6. Mal Pahadiya (मावणों)** **क) प्रवेशिका (प्राइमर) (मुद्रित)** **ख) गद्य-पद्य** **ग) व्याकरण** **7. Parhaiya (परहैया)** **क) प्रवेशिका (प्राइमर) (मुद्रित)** **ख) गद्य-पद्य** **ग) व्याकरण** **8. Korwa (कोरवा)** **क) गद्य-पद्य** **ख) व्याकरण** **9. Sabar (सबर)** **क) गद्य-पद्य** **ख) व्याकरण**

*****